दलित-समाज की त्रासदी का दस्तावेज : नाच्यौ बहुत गोपाल

डॉ. इशरत खान

अमृतलाल नागर प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार हैं। इनकी कृतियों में भारत के समाज, इतिहास और संस्कृति की बहुआयामी छवियां उजागर हुई हैं।

नागर जी ने अपने सामाजिक उपन्यासों में समसामयिक यथार्थ को चित्रित करते हुए मध्यवर्गीय एवं निम्नवर्गीय समाज की समस्याओं, विवशताओं एवं महत्वकांक्षाओं को स्वर दिया है। 'महाकाल', 'सेठ बाँकेलाल', 'बूँद और समुद्र', 'अमृत और विष', 'नाच्यौ बहुत गोपाल', 'बिखरे तिनके' तथा 'अग्निगर्भा' आदि नागर जी के सामाजिक उपन्यास हैं।

नागर जी का 'नाच्यौ बहुत गोपाल' उपन्यास सन् १९७८ में प्रकाशित हुआ। नागर जी का प्रस्तुत उपन्यास सर्वथा मौलिक एवं नवीन ढंग का उपन्यास है।

नागर जी, शहरी एवं मध्य वर्ग के उपन्यासकार हैं। किन्तु उनका 'नाच्यौ बहुत गोपाल' लीक से हटकर औपन्यासिक कृति हैं। इसमें नागर जी ने नगरों में रहने वाले मेहतर समाज की भाग्य गाथा को प्रस्तुत किया है। इसमें उपन्यासकार का मुख्य उद्देश्य मेहतर-समाज का समग्र चित्र अंकित करना है। 'निर्गुनियां' के चरित्र के माध्यम से काम एवं प्रेम के द्वन्द्व को प्रस्तुत किया है। उपन्यास की नायिक निर्गुनिया के माध्यम से नारी तथा मेहतर जाति की समस्याओं को उजागर किया गया है।

उपन्यास का प्रारंभ शर्मा एवं निर्गुनियां के साक्षात्कार से होता है। शर्मा जी, निर्गुनियां से उसके सम्पूर्ण जीवन के उतार-चढ़ाव को गहराई से जानना चाहते हैं। उपन्यास की नायिका का जन्म एक ब्राह्मण परिवार में होता है। माता की मृत्यु के पश्चात् निर्गुनियां का बचपन नाना-नानी के अच्छे संस्कारों के मध्य बीता लेकिन नाना-नानी की मृत्यु के बाद, उसके पिता ने निर्गुनियां को ब्राह्मण महाजन पंडित बटुक प्रसाद को सौंप दिया। उस घर के विकृत परिवेश के कारण निर्गुनियां का जीवन बरबाद हो जाता है। अन्ततः उसका विवाह वृद्ध मसुरियादीन के साथ कर दिया जाता है। पति से यौन-तृप्ति न हो सकने के कारण, वह मोहना मेहतर के साथ भाग जाती है और विवाह कर लेती है। उपन्यासकार ने सदियों से शोषित, प्रताड़ित मेहतर समाज का चित्रण निर्गुनियां के माध्यम से किया है।

उपन्यासकार ने वर्णव्यवस्था के जड़-संस्कारों तथा उच्च वर्ण के झूठे अहं, अभियान और पाखंड पर तीव्र प्रहार किया है। इसीलिए मोहना, निर्गुनियां को मेहतरानी बनाकर ही रखता है। ब्राह्मण से मेहतरानी बनी निर्गुनियां उच्च जाति की पोल खोलती हुई कहती हैं- बड़े-बड़े त्रिपुण्डधारी पंडितों को भी मैंने अछूत स्त्रीयों के पीछे-पीछे कुत्ते की तरह घूमते हुये देखा है। लुकछिपकर मुँह काला करने के बाद फिर उजागर में मूंछों पर ताव देकर 'हटो-बचो' चिल्लाना शुरू कर देते हैं। एक बार छूत-अछूत यों ही गड्ड-मड्ड देखके मेरे मन में यह सवाल उठा कि इन दोनों में, इस दम कौन ब्राह्मण है और कौन मेहतर। वर्णभेद के आधार पर शोषण के विविध रूप समाज में पनपे हैं। उच्च वर्ण, निम्न वर्ण के साथ पशुवत् व्यवहार करता है। प्राचीन वर्णव्यवस्था ने ही समाज में ऊंच-नीच, जातिभेद, छुआछुत जैसी अनेक बुराइयों को जन्म दिया है।

भारतीय समाज में मौजूद विविध समस्याओं में से छुआछुत एक प्रमुख समस्या है। इस देश में एक वर्ग विशेष को इस अस्पृश्यता के कारण मानवीय अधिकारों से वंचित रखा गया। उन्हें निम्नतम जीवन बिताने के लिये बाध्य किया गया। इन लोगों का सामाजिक, आर्थिक एवं धार्मिक दृष्टि से शोषण किया गया, जिनके कारण इनको जीवन की सब सुविधाओं से वंचित रहना पड़ा। वास्तव में अस्पृश्यता हिन्दुओं के धार्मिक एवं सांस्कृतिक इतिहास का एक बहुत बड़ा कलंक है।

अस्पृश्यता से तात्पर्य एक ऐसी धारणा से है जिसके अनुसार एक व्यक्ति, दूसरे व्यक्ति को छूने, देखने और छायामात्र पड़ने से अपवित्र हो जाता है और पवित्र होने के लिये कुछ विशेष संस्कार करने पड़ते हैं।

नागर जी ने प्रस्तुत उपन्यास में अछूत समस्या को मेहतर समस्या के रूप में दिखाया है। यहां भंगी को ही अछूत समझा जाता है। उच्च वर्ग, मेहतर की परछाई मात्र से ही दूर रहते हैं। यह इतना महत्वपूर्ण काम करते हैं। समाज में इनकी प्रशंसा क्या, इन्हें निरादर ही मिलता है। इस संदर्भ में नागर का कथन है- "मेहतर कोई जाति नहीं। विजेता ने विजितों को दास बनाकर, उनसे जबरदस्ती मलमूत्र उठवाना आरंभ किया।" समाज का हर वर्ग अपने को मेहतर से ऊँचा समझता है- "हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, ऐसी कौन-सी भारतीय जाति है जो अपने आपको मेहतरों से ऊँचा नहीं समझती और जो उन्हें छूने से घिनाती नहीं है।" इस वर्ग के सभी पात्र 'मेहतर' होने से काफी दुःखी हैं। उपन्यास का पात्र 'मज्जू' कहता है- 'मतलब ये है कि जूते लाल रवाना तो खैर, जब मेहतर का चौला पाया है तो, एक तरह से हक ही है हमारा।'

नागर जी ने सम्पूर्ण उपन्यास में मेहतरों के दुख-दर्द का यथार्थ चित्रण किया है। इसी के साथ हिन्दू समाज पर कठोर प्रहार भी किया और उनके लिए मुक्ति की दिशा भी बताई है।

भारतीय समाज की सबसे पीड़ित एवं त्रस्त नारी ही रही है। पुरुष तो स्वच्छन्द जीवन बिताता है और नारी घर में पुरुषों द्वारा शोषित होती रहती है। नागर जी के प्राय: सभी उपन्यासों में नारी की दयनीय स्थिति को चित्रित किया गया है।

प्रस्तुत उपन्यास में नागर जी ने निर्गुनिया के माध्यम से नारी की स्थिति को अंकित किया है। उपन्यास के सभी पात्र नारी की सामाजिक स्थिति पर प्रकाश डालते हैं। एक पात्र कहता है कि "बूटीफुल औरत मर्दों के लिए कचालू-मटर की चाट होती है।" उपन्यास की नायिका निर्गुनिया कहती हैं- "दुनिया में दूर-दूर देशों तक, औरत से बढ़कर और कोई भी ज्यादा गुलाम नहीं है। मैंने ब्राह्मण भी देखा, मेहतर भी देखा। मरद सब जगह एक हैं। सांसें सब जगह एक हैं, सब जगह औरत की एक जैसी ही मिट्टी पलीत होती है। मैंने दलितों की समसिया को दोहरे ढंग से भोगा है।"

निर्गुनिया ने देखा कि चाहे ब्राहमण नारी हो या दलित नारी, वह हमेशा, हर जगह पुरुषों द्वारा ही छली जाती है। यह दलित नारी के कटु यथार्थ को व्यक्त करती हुई कहती है- "दुनिया में दो पुराने से पुराने गुलाम हैं। एक भंगी और दूसरी औरत। जब तक ये गुलाम हैं आपकी आजादी रुपये में पूरे सौ के सौ नये पैसे भर झूठी है।" आगे वह कहती है- "औरत हर तरह से मरद जाति की दबोच में है। जब चाहता है गला सहलाता है और जब चाहता उसे घोंट भी देता है। जिसके पास ताकत होती है वह कमजोर के साथ यही करता है। सदा करता आया और सदा करता रहेगा।"

इस प्रकार कहा जा सकता है कि पुरुष चाहे जितनी प्रगति कर ले लेकिन कहीं-कहीं उसकी सोच में यह धारणा रहती है कि नारी पर उसका एक छत्र अधिकार है। उपन्यास में 'रिशी देवी' 'वेदवती' आदि विधवा नारियों के दुखों का वर्णन भी किया गया है- "इससे घर वालों ने उन्हें, उनकी बड़ी बहिन की तरह घर से निकाला तो नहीं पर विधवा होने के कुछ ही दिनों बाद रिशीदेवी के ससुर ही उनके प्रेमी बन गए।"

इसी के साथ उपन्यासकार ने दलित वर्ग में आई हुई चेतना का चित्रण भी उपन्यास में किया है। दलित, सामाजिक उत्थान के लिए गांधी जी से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को संवारने का प्रयत्न करते हैं। इसी प्रेरणा के फलस्वरूप निर्गुनिया मोहन को पाठशाला खोलने के बारे में कहती हैं और मोहन उसमें पूरा सहयोग देता है। मोहन का यह कथन महत्वपूर्ण कहा जा सकता है- "आजकल अछूतोद्धार का जमाना है। अछूतों की उन्नति भी होनी चाहिए। इसलिए स्कूल खोलना सबसे अच्छा रहेगा। हमारी बिरादरी के बच्चों को तालीम मिलेगी। साले पढ़-लिख के कहीं नौकरी तो कर सकेंगे। जनम-जनम के मैला ढोने के पाप से तो छुट्टी पायेंगे।"

उपन्यासकार ने दलित समाज में आई श्रम और संगठन की शक्ति को दर्शाकर उसके अच्छे भविष्य की कामना भी की है। मोहना का स्वर

यह इतना महत्वपूर्ण काम करते हैं। समाज में इनकी प्रशंसा क्या, इन्हें निरादर ही मिलता है। इस संदर्भ में नागर का कथन है- "मेहतर कोई जाति नहीं। विजेता ने विजितों को दास बनाकर, उनसे जबरदस्ती मलमूत्र उठवाना आरंभ किया।" समाज का हर वर्ग अपने को मेहतर से ऊँचा समझता है- "हिन्दू, मुसलमान, सिख, ईसाई, ऐसी कौन-सी भारतीय जाति है जो अपने आपको मेहतरों से ऊँचा नहीं समझती और जो उन्हें छूने से घिनाती नहीं है।" इस वर्ग के सभी पात्र 'मेहतर' होने से काफी दुखी है। उपन्यास का पात्र 'मज्जू' कहता है- 'मतलब ये है कि जूते लाल रवाना तो खैर, जब मेहतर का चौला पाया है तो, एक तरह से हक ही है हमारा।'

इसी मूल्य से ओतप्रोत है। वह कहता है- "मेरी तुम्हारी औलाद भला क्यों भंगी होगी, अब तो गांधी बाबा का अछूत-उद्धार होने लगा है। हम लोग हरिजन कहलाने लगे हैं। कल से सज्जन भी हो जायेंगे।"

'नाच्यौ बहुत गोपाल' उपन्यास में जातीय गर्व और अस्तित्व-बोध का भी परिचय भी दिया गया है। निर्गुनियां का बेटा अधिकारी के पद पर कार्यरत है। जब कार्यालय में उसकी जाति को लेकर उसका उपमान किया जाता है तब बेटे निर्गुण मोहन का अस्तित्व-भाव जाग उठता है। निर्गुणमोहन के कथनों में चेतना के स्वर मुखरित हुए हैं-

१. "अगर वह अपने को महत् मानता है तो मैं भी मेहतर हूँ। किसी से कम नहीं। मैं अपनी सर्विस से इस्तीफा दे दूंगा। मगर इन बांमन, ठाकुरों, बनियों, कायस्थ वगैरह कम्युनल रिएक्शनरीज को लिफ्ट नहीं दूंगा।"

२. अगर जातों पर ही ऊंच-नीच पन का ढांचा खड़ा करना हो तो हमारे पुरखे महर्षि बाल्मीक जी सबसे ऊँचे जाति के थे।

उपन्यासकार ने यह बतलाने का प्रयास किया है कि मानव धर्म ही श्रेष्ठ धर्म है। प्रस्तुत उपन्यास में दलित जीवन का यथार्थ अंकन किया है। इस संदर्भ में गोपालराय का कहना है- दलित जीवन के चित्रण की दृष्टि से अमृतलाल नागर का नाच्यौ बहुत गोपाल (१९७८) एक अत्यन्त उल्लेखनीय उपन्यास है जिसमें भंगी जीवन की नारकीय वास्तविकताओं का बहुत सटीक और संवेदनापूर्ण अंकन किया गया है। भंगी जाति की ऐतिहासिक वास्तविकता यह है कि युद्धों में विजयी जातियों ने पराजित जातियों को भंगी कर्म करने के लिये विवश किया था। इस विवशताजन्य नारकीय अनुभव के अंकन के लिए नागरजी ने निर्गुनियां की कथा कल्पित की है जो जन्मना ब्राह्मण कन्या होकर भी पारिवारिक-सामाजिक स्थितियों के कारण एक भंगी युवक से प्रेम कर बैठती है और उसके संग भाग जाती है। उसके ब्राह्मण से भंगी बनने की प्रक्रिया-परिणति तथा सामाजिक शोषण और प्रताड़ना का, जो अत्यन्त वीभत्स, भयानक और अमानवीय है, सजीव वृत्त प्रस्तुत किया है।

●

पता - हिन्दी विभाग, गोवा विश्वविद्यालय, गोवा